जन संपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 15 मई 2019

एजेके एमसीआरसी के कंवर्जेंट जर्नलिज़्म के छात्रों ने आईना फेस्टिवल का आयोजन किया जिसमें फिल्म प्रदर्शन और पैनल चर्चा हुई

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के एजेके मास कम्युनिकेशन रिसर्च सेंटर के एम.ए. कंवर्जेंट जर्नलिज़्म:आखिरी सालः के छात्रों ने सोमवार को सालाना फेस्टिवल, आईना-2019 का आयोजन किया जिसमें डाक्यूमेंट्री और उनके मल्टीमीडिया के कार्यों को स्क्रीनिंग हुई।

इस मौके पर " इज़ मीडिया कवरेज आॅफ 2019 इलेक्शन्स लाॅपसाईडेड " विषय पर पैनल चर्चा हुई, जिसमें टीवी 9 की एक्ज़िक्यूटिव एंड कंसल्टिंग एडिटर स्मिता शर्मा और तिरंगा टीवी की सीनियर एक्ज़िक्यूटिव एडिटर सीमा पाशा सहित वरिष्ठ पत्रकारों ने हिस्सा लिया। इस सत्र का संचालन वाशिंगटन पोस्ट की दिल्ली संवाददाता निहा मसीह ने किया।

इस चर्चा में हिस्सा लेने वालों ने इस बात पर चिंता ज़ाहिर की कि मीडिया आम लोगों ये जुड़े मुद्दे उठाने की बजाय इस या उस पार्टी की तरफदारी करता नज़र आ रहा है। उन्होंने कहा कि आज के संदर्भ में मीडिया वस्तुतः कार्पोरेटाइज़्ड हो गया है और पत्रकार संतुलित रिर्पोटिंग के लिए जद्दो-जहद कर रहे हैं। इस सत्र में सवाल-जवाब का दौर भी चला।

इससे पहले बिलाल अहमद और करण आनंद की 'बागपत के बाग़ी ', हसन अक्रम और ईला काज़मी की 'स्वालिहात ' और रजत मिश्र तथा मिद्दत फातिमा की 'भोजपुरिया ड्रीमलैंड ' दिखाई गईं।

बागपत के बाग़ी में दिखाया गया है कि किस तरह उत्तर प्रदेश के बागपत ज़िले की महिलाएं और लड़कियां लिंग और जाति भेद भाव से लड़ रही हैं। स्वालिहात में मदरसों में पढ़ने वाली लड़कियों की भावनाओं और मुद्दों को उजागर किया गया है। भोजपुरिया ड्रिमलैंड में दिल्ली में भोजपुरी गायकों के संघर्ष को दर्शाया गया है।

इस फेस्टिवल में तीन मल्टीमीडिया प्रोजेक्ट का भी प्रदर्शन हुआ। इनमें आज़म अब्बास, अनुभव चक्रबर्ती, अमनजीत सिंह और इंतिफदा बशीर की 'लेटंट ड्रीम्स, घाडा मुहम्मद, ज़ीशान फैसल,

सानिया अशरफ और एशा हुसैन की 'रूटेड-अपरूटेड और हन्नान ज़फर, अखिलेश नगारी, ताहिरा खान और अर्पिता सिंह की 'मसेमित घरीह ' शामिल हैं।

लेटंट ड्रीम्स में दिल्ली में बाहर से आकर दैनिक वेतन पर काम करने वाले श्रमिकों की समस्याओं को दिखाया गया है। 'रूटेड-अपरूटेड में बेहतर ज़िन्गदी और शांति की चाह में अपना घर बार छोड़ कर कहीं और चले जाने वालों को दिखाया गया है। 'मसेमित घड़ी में कश्मीरी पंडितों और कश्मीरी मुसलमानों के जीवन को दर्शाया गया है, जो अपनी संस्कृति और पहचान को बनाए रखने की जद्दो जहद कर रहे हैं।

छात्रों की इन फिल्मों के प्रदर्शन के दौरान डाक्यूमेंट्री फिल्मकार संजय काक और वायर की कंसल्टिंग एडिटर अर्फा खानम शेरवानी मौजूद थे।

एजेके एमसीआरसी की कार्यकारी निदेशक प्रोफेसर शोहिनी घोष ने मेहमानों और पैनल के सदस्यों का स्वागत किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया संयोजक